भट्टारक विद्यानन्दि

जीवन-परिचय : आचार्य विद्यानन्दि बलात्कारगण की सूरत शाखा के भट्टारक थे। इस शाखा का आरम्भ भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति से हुआ है। ये भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। विद्यानन्दि ने अनेक तीर्थक्षेत्रों की यात्रा की थी। इनके द्वारा अनेक मूर्तियाँ भी प्रतिष्ठित की गयी हैं। इन्हें राजाओं द्वारा भी सम्मान प्राप्त था।

अनेक प्रमाणों के आधार पर विद्यानन्दि का समय विक्रम संवत् 1499-1538 पाया जाता है।

रचना-परिचय : इनके द्वारा रचित ग्रन्थ एक है—

1. सुदर्शन चरित : भट्टारक विद्यानन्दि द्वारा सुदर्शनचरित नाम चरितकाव्य की रचना गन्धार नगर या गन्धारपुरी में की गयी है। सूरत नगर का ही नामान्तर गन्धार नगर है। इस कृति की रचना विक्रम संवत् 1355 के लगभग सम्पन्न हुई है। इस ग्रन्थ में पुण्यपुरुष सुदर्शन का आख्यान वर्णित है। कथावस्तु 12 अधिकारों एवं 1362 श्लोकों में विभक्त है।